Dr. Priti Ranjan
H.D. Jain College (Ara)
Dept of History
M.A Semester - 2
paper - 7
unit - V

Topic- Kisan sabha Movement.

बिहार में किसान सभा आंदोलन :-

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना और कालांतर में उनकी शोषणात्मक प्रवृत्ति तथा भारतीय शासकों के खिलाफ 19 वीं शताब्दी में ही भारतीय किसानों में व्याप्त असंतोष का अन्त होता आ रहा था और कई बार उन्होंने विद्रोह व आंदोलन का रास्ता पकड़ा। 19-20 वीं सदी में राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष ने किसानों के असंतोष को आंदोलन का शक्ल देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बिहार के किसानों द्वारा जमींदारों के शोषण और विदेशी हुकूमत के खिलाफ अनेक बार विद्रोह किया गया।

बिहार के किसान अंग्रेजी प्रशासन के समय भूमि व्यवस्था की विभिन्न प्रकार की बुराइयों का शिकार बने हुए थे तथा उनका जीवन दुःख गरीबी और निःसहायता में व्यतीत हो रहा था। ऐसे में 1929-30 की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी के कारण वस्तुओं के मूल्य में ह्रास होना आरंभ हुआ जिसके कारण बिहार में कृषकों की क्रयशक्ति में भारी कमी आयी क्योंकि वे अनाज बेचते थे अन्न और नील पैदा करते थे। इन सभी के मूल्यों में विश्व भर के बाजारों में काफी गिरावट हुई थी।

बिहार जैसे कृषि प्रधान राज्य पर इसका घातक प्रभाव पड़ना अनिवार्य था। ऐसी स्थिति में भी किसानों को पहली वाली दर से मालगुजारी एवं अन्य कर चुकाना आवश्यक था, जिससे उनकी ऋणग्रस्तता में वृद्धि हुई।

यह भी बात सत्य है कि किसान आंदोलन और राष्ट्रीय आंदोलन का अटूट रिश्ता कई दृष्टि से महत्वपूर्ण थी। वस्तुतः किसान आंदोलन वहीं उभर सके जहां राष्ट्रीय आंदोलन की नींव डाली जा रही थी। केरल, पंजाब, आंध्रप्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा बिहार इसके स्पष्ट उदाहरण हैं।

शुरू के ब्रिटिश विरोध का मुख्य शक्ति किसान ही थे, जैसे सन्यासी विद्रोह (1763-1800) संथाल विद्रोह, 1857 का विद्रोह, नील विद्रोह, कूका विद्रोह इत्यादि। यहां तक कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाया गया चम्पारण सत्याग्रह किसान आंदोलन ही था। महात्मा गांधी ने 1917 में चम्पारण के किसानों की दुर्दशा को देखते हुए ही पहला सत्याग्रह किया तथा तीनकठिया पद्धति को समाप्त कराया लेकिन उससे अधिक वर्षों से शोषित उत्पीड़ित किसानों को चम्पारण सत्याग्रह ने जगा दिया तथा किसानों को अत्याचार के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा दी। जून 1919 में स्वामी विद्यानंद के नेतृत्व में मधुबनी के किसानों ने दरभंगा महाराज के खिलाफ आंदोलन किया। चूंकि कांग्रेस पर दरभंगा महाराज का प्रभाव था इसलिए कांग्रेस ने आंदोलन का समर्थन नहीं किया। प्रसिद्ध किसान नेता एन० जी० रंगा ने लिखा है कि कांग्रेस ने 1905-19 के बीच किसानों पर उतना ध्यान नहीं दिया जितना उद्योगपति और भूमिपतियों पर दिया। हताश होकर किसानों ने हिंसा का सहारा लिया। यह आंदोलन पूर्णिया सहरसा भागलपुर का सहारा लिया। तथा मुंगेर जिलों तक फैल गया।

मुंगेर में 1922-23 में शाह मुहम्मद जुबैद और श्री कृष्ण सिंहा ने किसान सभा का आयोजन किया। लेकिन किसान आंदोलन में सबसे निर्णायक भूमि स्वामी सहजानंद सरस्वती ने निभायी। जिन जन्म उत्तरप्रदेश के गाजीपुर जिला मे हुआ। लेकिन उनक कर्मभूमि बिहार रहा। 1914-20 तक वे समाजसुधार का का किये और गांधी जी के सम्पर्क में आए। बिहटा में 19 में श्री सीताराम आश्रम की स्थापना की। उसी वर्ष बिहार प्रांतीय सभा का गठन किया। किसान संगठन को बि के गाँवों तक फैलाने में कार्यानंद शर्मा (मोकामा, बड़हि राहुल सांकृत्यायन (छपरा, सीवान) पंचानन शर्मा यदुनन्दन शर्मा (गया) का भी सहयोग मिला।